आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 22 रोहतक, 7 नवम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

पानीपत में होगा आर्य युवा महासम्मेलन

रोहतक। पत्रकारों से बातचीत करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी एवं मन्त्री मा० रामपाल आर्य, हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र आर्य एवं आर्यवीर दल हरयाणा के मन्त्री वेदप्रकाश आर्य।

रोहतक (1 नवम्बर, 2015)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक में प्रतिमास के प्रथम सप्ताह में होने वाले मासिक सत्संग का शुभारम्भ प्रात: 9 बजे यज्ञ द्वारा किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा जितेन्द्र शास्त्री जी रहे। तत्पश्चात् बहन सुमित्रा आर्या, बहन दया आर्या एवं आचार्य रामदयाल ने अपने भजनों के माध्यम से सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया।

आज के मुख्यवक्ता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (रोजड़, गुजरात) रहे। उन्होंने बहुत ही सुन्दर एवं सरल शब्दों में ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के बारे में बताया तथा कहा कि सुख तो सभी चाहते हैं, परन्तु सुख जैसा कर्म नहीं करते। संसार में तो प्राकृतिक सुख है, सच्चा सुख तो मोक्ष में ही मिलता है, जो दीर्घकाल तक मिलता है। उन्होंने परमात्मा के गुणों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि मानव जन्म पाकर यदि मनुष्य यज्ञ नहीं करता, तो उसका जीवन व्यर्थ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट सत्यार्थप्रकाश एवं संस्कारविधि सभी आर्य महापुरुषों को अवश्य पढ़ना चाहिए। इस ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द जी ने स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना की बहुत ही सरल विधि बताई है। स्वामी जी ने बहुत ही सारगर्भित प्रवचन दिया।

श्री सूबेदार करतारसिंह आर्य आर्यसमाज गोहानामण्डी जिला सोनीपत ने भवन निर्माण-कार्य में एक कमरे के सहयोग के लिए 2,50,000 रुपये दान दिया। जिनको सभा द्वारा पगड़ी बांधकर एवं स्मृतिचिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। आचार्य बलदेव

क्रमशः पृष्ठ 2 पर...

ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में

आर्य युवा महासम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्थान: आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत

दिनांक 06-12-2015 रविवार

समय-प्रात: 9 बजे से 1 बजे तक

यज्ञ व स्वच्छता अभियान

भ्रूणहत्या बेटी बचाओ दहेज उन्मूलन

नशामुक्ति वस्त्र निर्माण आर्य मान्यताएं

गो-रक्षा देश भक्ति

निवेदक

आचार्य विजयपाल	मा० रामपाल आर्य	आचार्य योगेन्द्र	आचार्य सर्वमित्र	आचार्य आजादसिंह आर्य
सभाप्रधान	सभामन्त्री	संयोजक	सह-संयोजक	प्रधान-आर्य बाल भारती विद्यालय,
9416055044	9416874035	(आर्य युवा महासम्मेलन) 9728333888	(आर्य युवा महासम्मेलन) 8199938001	पानीपत 9416019506

सामवेद अथर्ववेद

आर्यवीर दल कर रहा है युवाओं के सर्वांगीण विकास का पावन पवित्र कार्य

किनाना गाँव में आर्य वीर दल जीन्द द्वारा आर्य समाज किनाना के सहयोग से आयोजित सात दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का रविवार को समापन हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने समारोह की अध्यक्षता की। शिविर में आर्य वीर दल के सुयोग्य व्यायाम शिक्षक श्याम आर्य और मनीष आर्य के मार्गदर्शन में गाँव के युवा लाठी, भाला, कराटे, सर्वांग सुंदर व्यायाम, दण्ड बैठक, योगासन, प्राणायाम और ध्यान का प्रशिक्षण दिया।

समापन समारोह में उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि आर्य वीर दल युवाओं के सर्वांगीण विकास का पावन पवित्र कार्य कर रहा है। आर्य वीर दल वो कार्य कर रहा है जिस तरफकिसी का ध्यान नहीं है। यदि हम अपने बच्चो को संस्कारित बनाना चाहते है तो उन्हें लगातार आर्य समाज और आर्य वीर दल के संपर्क में रखे। आर्यजगत के सुविख्यात भजनोपदेशक पं० रामनिवास आर्य ने कहा कि देश की नींव युवा का कंधा अत्यंत कमजोर हो गया है । इसे मजबूत बनाना चाहते हो तो चरित्र निर्माण पर बल देना होगा और जिसके लिए आर्य वीर दल के चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन नितान्त आवश्यक है जिसे आर्य वीर दल जीन्द आपको गाँव-गाँव यथा समय उपलब्ध करा रहा है । पं० रामनिवास जी ने अपनी चिर परिचित शैली में पाखण्ड और अन्धविश्वास पर भी कड़े प्रहार किये ।

समापन समारोह का विशेष आकर्षण आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन रहा । आर्यवीरो के प्रदर्शन को देखकर सभी ग्रामवासियों ने आर्य वीर दल और इनके शिक्षकों की सराहना की। व्यायाम शिक्षक श्याम आर्य और मनीष आर्य के प्रदर्शन ने सभी को तालियाँ बजाने पर मजबूर कर दिया। शिविर के व्यवस्थापक संजय आर्य ने आर्य वीर दल जीन्द की गाँव-गाँव में शिविर आयोजित करने की इस मुहिम की सराहना की और कहा कि यह कार्य वास्तव में युवाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य है। पूरे जिले में आर्य वीर दल की इस पहल की प्रशंसा हो रही है।

आर्यसमाज किनाना के प्रधान कपूरसिंह आर्य व्यायाम प्रदर्शन को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और आर्य वीर दल जीन्द की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। उन्होंने भविष्य में भी इस प्रकार के शिविर आयोजित कराने की बात कही ।

समापन समारोह की शुरुआत वेद प्रचार मंडल के महामंत्री कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में किये गये वैदिक यज्ञ से हुई । आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक उमेद शर्मा ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि चरित्र निर्माण का कारखाना अगर कहीं है तो वह आर्यसमाज के पास है। आर्यसमाज का युवा संगठन आर्य वीर दल देश के निर्माण के लिए युवा तैयार कर रहा है। समारोह में लोगों व आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथि भारतीय जनता पार्टी के जिला महामंत्री अमरपाल राणा ने कहा कि आज के वातावरण में जब युवा को पथभ्रष्ट करने के सभी साधन मौजूद हैं । ऐसे समय में अगर युवा को कोई बचा सकता है तो वह केवल और केवल आर्यसमाज है। गांव बीबीपुर के सरपंच एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सुनील जागलान ने कहा कि भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों के बारे में यदि कोई जागृत है तो वह आर्य समाज है। हमें यदि अपने बच्चो को सुयोग्य और सफल बनाना है तो आर्य समाज और आर्य वीर दल के संपर्क में रखना चाहिए।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य ने बताया कि इसके बाद नन्दगढ़ गांव में सोमवार से अगला शिविर आयोजित किया जायेगा। आर्य वीर दल जीन्द का ये प्रयास है कि वर्ष भर अलग-अलग गाँवो में इस तरह के शिविरो का लगातार आयोजन किया जाए।

इस अवसर पर समाजसेवी एवं वरिष्ठ भाजपा नेता रामफल शर्मा और आर्य समाज किनाना के प्रधान कपूर सिंह आर्य का सम्मान भी किया गया। देश भर में चल रहे सत्यार्थ प्रकाश क्रांति महा अभियान के तहत गांव के बुद्धिजीवी एवं स्वाध्यायशील लोगो को सत्यार्थ प्रकाश भेट की गई। समापन समारोह में गांव के पूर्व सरपंच रमेश कुमार, संजय आर्य, अनिल किनाना, मास्टर रणबीर, उमेद सूबेदार, पूर्व पंच देशराज, जयपाल सैनी, दयानंद मास्टर, अनिल शर्मा, रामकिशन दुहन समेत गांव के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जन्मोत्सव सम्पन्न

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक व नेता थे। आपने युवावस्था में गृहत्याग कर संस्कृत का गहन अध्ययन कर गुरुकुल किरठल जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) का सफल संचालन किया एवं साप्ताहिक पत्रिका आर्य मर्यादा व सम्राट पत्र का दीर्घकाल तक सम्पादन किया तथा आर्य सिद्धान्तों पर छह पुस्तकें लिखीं और संभाषण व लेखन के माध्यम से आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया।

आपने हिन्दीरक्षा सत्याग्रह व हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। आप आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री रहे तथा लोकसभा के तत्कालीन झज्जर चुनाव क्षेत्र से सांसद रहे। आप स्वामी ओमानन्द जी व प्रो० शेरसिंह के घनिष्ठ सहयोगी मित्र रहे। आपके जन्म-गाँव बरहाणा (झज्जर) में आपकी स्मृति में स्थानीय आर्यसमाज ने आर्यसमाज मन्दिर, श्री सिद्धान्ती आयुर्वेदिक निःशुल्क औषधालय, यज्ञशाला एवं व्यायामशाला का निर्माण कराया है जिसके परिसर में प्रतिवर्ष उनका जन्मदिवस दशहरे पर धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष भी दशहरे पर दिनांक 22.10.2015 को उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बृहद् यज्ञ का अनुष्ठान किया गया तथा राजपाल बरहाणा ने उनके आदर्शों एवं सामाजिक सेवाकार्यों का वर्णन किया तथा उनके श्रेष्ठ गुणों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी साथ ही उन्होंने सिद्धान्ती जी के भ्राता स्व० चौ० वेदमित्र के अपनी 9½ एकड़ कृषि भूमि व 1200 गज के भूखण्ड दान की महती प्रशंसा करते हुए उपस्थित स्त्री-पुरुषों से सिद्धान्ती जी की स्मृति में चलाये जा रहे सेवाकार्यों में सहयोग बनाए रखने की अपील की। उपस्थित जनों ने सिद्धान्ती जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भरपूर दान का सहयोग भी किया। जन्मोत्सव कार्यक्रम को सफल करने अन्यों के साथ-साथ यहाँ केवैद्य सुखीराम आर्य व उनके सेवक का विशेष सहयोग रहा।

मन्त्री, आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)

पानीपत में होगा आर्य युवा महा.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

जी ने सत्संग में उपस्थित आर्य पुरुष व महिलाओं को आशीर्वाद दिया। मंच का संचालन श्री अभय आर्य निदेशक आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत ने किया।

मंच पर उपस्थित आज के प्रमुख व्यक्तियों में श्री जगदेवसिंह वेदालंकार, आचार्य योगेन्द्र आर्य, आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री सुखवीर शास्त्री, श्री रणवीर बल्हारा, श्री कर्णसिंह मोर, श्री हवासिंह राठी, श्री अनूप श्योराण, श्री सुभाष सांगवान, डॉ० सत्यपाल, राजेश दहिया, श्री सत्यमुनि जी दयानन्दमठ रोहतक, मा० मेघराज आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अन्त में सभी आर्य बहन-भाइयों ने ऋषिलंगर में प्रसाद का आनन्द लिया।

॥ ओ३म् ॥

सच्ची उपासना ही पहिचान

गतांक से आगे...

स्तुति के ये परिणाम हैं (1) वृद्धि (2) वासना विनाश (3) विज्ञान के सूर्य का उदय। यदि ये परिणाम हैं तो स्तवन ठीक है—अन्यथा नहीं। स्तवन से जिस ज्ञान की उत्पत्ति होती है वह ज्ञान प्रकाशमय है। उसमें आत्मा को अपना कर्तव्यपथ स्पष्ट दिखता है। इस ज्ञान से—जीवात्मा सदा सजग रहता है। जिन विषयों के प्रति सामान्य जगत् बड़ा सतर्क रहता है उन्हीं को सब कुछ समझकर उनमें उलझा रहता है। यह ज्ञानी ज्ञान के कारण उन विषयों की माया-ममता को देखकर कभी उनमें फंसता नहीं। यह ज्ञान सदा उसे जागरित रखता है और इसीलिए ये विषयरूप परिपंथी इस पर आक्रमण नहीं कर पाते। स्तवन से प्राप्य इस ज्ञान को पाते वे हैं जो कि बहुत ही नियमित गति से चलते हैं। कोई भी चीज आवेश में एक-दो दिन या कभी-कभी (by fits and starts) की जाकर लाभप्रद नहीं होती दीर्घकाल—नैरन्तर्य और आदर से सेवित भी 'ऋतावृध' को ही ज्ञान प्राप्त कराता है। ऋतावृध्—जो कि ऋत से नियमित गति से आगे बढ़ रहा है।

पूज्य आचार्य बलदेव जी

भावार्थ—यदि हमारा स्तवन हमारे में उल्लिखित परिणामों को नहीं पैदा करता रहा तो स्पष्ट है कि हमारे स्तवन में कहीं कमी है। उस कमी को ठीक करके हम प्रभु के सच्चे स्तोता बनें और वृद्धि, वासना, विनाश व विज्ञान को प्राप्त करें।

—आचार्य बलदेव

निर्वाचन

आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी (हरयाणा) का त्रिवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारीगण चुने गए हैं—

संरक्षक-मण्डल-सर्व श्रीमती डॉ. सुशीला आर्या, सुनीता आर्या, सर्वश्री डॉ. धर्मवीर आर्य, चौ. तारीफ सिंह तथा भीमसैन प्रभाकर। प्रधान-प्रो० देवदत्त आर्य, उपप्रधान-प्रो० हरिश्चन्द्र आर्य, मा० श्यामसुन्दर आर्य तथा सुक्रमपाल आर्य, मंत्री-श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, उपमंत्री-श्री रामकिशन आर्य, कोषाध्यक्ष-डॉ. चन्द्रप्रकाश आर्य, सह-कोषाध्यक्ष-श्री राजेश कुमार आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री मनोज आर्य व सह-पुस्तकाध्यक्ष श्री रवि आर्य तथा प्रचारमंत्री-डॉ. रामफल आर्य व कानूनी सलाहकार-श्री कर्मवीर सिंह आर्य, अधिवक्ता।

विशेष-सूचना-आर्यसमाज चरखी दादरी का वार्षिकोत्सव दिनांक 28 तथा 29 नवम्बर 2015 को मनाया जाएगा।

—राजेन्द्र कुमार आर्य, मंत्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नव० 2015
2.	आर्यसमाज प्रेमनगर, सैक्टर-2, 6, 7, बहादुरगढ़	8 नव० 2015
3.	आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल	25 से 29 नव० 2015
4.	आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी	28 से 29 नव० 2015
5.	**आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत**	6 दिसम्बर 2015
	स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, **पानीपत**	
6.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास	16 नव० से 6 दिस० 2015
	119, गौतम नगर, नई दिल्ली-49	—सभामन्त्री

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। —सभामन्त्री

'असहिष्णुता' का बवाल

❑ प्राचार्य अभय आर्य

आज कुछ राजनेता व लेखक, कलाकार गोहत्या व गोमांस भक्षण के विरोध को 'असहिष्णुता' से जोड़कर बवाल खड़ा कर रहे हैं। सभी कुछ सहन करने योग्य होता तो वेद यह सन्देश क्यों देता—'मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।' अर्थात् हे भगवान्! आप दुष्ट काम और दुष्टों पर क्रोधकारी हैं, मुझको भी वैसा ही कीजिए।

आचार्य अभय आर्य

अधिकांश साहित्य, चलचित्रों आदि में नायक को एक ऐसे आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो दण्डाधिकारी न होते हुए भी अन्याय, अत्याचार का प्रतिकार करता है। इन बवाल करने वाले राजनेताओं व लेखकों से इनके व्यक्तित्व के अनुरूप हमें ऐसे साहित्य व चलचित्रों का इनके द्वारा विरोध करने की अपेक्षा करनी चाहिए। क्या ये ऐसा कर सकेंगे? कदापि नहीं। अत: इनका बवाल छद्म होने के साथ-साथ एकांगी मानसिकता से भी ग्रसित है, ऐ ऐसी मानसिकता से जो आर्यावर्त की संस्कृति के उच्च आदर्शों को मानने व अपनाने में पूरी तरह से अक्षम है। बवालियों ने इस बात पर जोर ही नहीं दिया कि गोहत्या व गोमांस खाना महापाप है। बवाल करने वाले जानें कि कभी इस देश में कभी मनु महाराज ने कानून बनाया था कि 'जो दूसरे को बिना अपराध मारने वाले हैं, उनको मार के पश्चात् विचार करना चाहिए।' अब ऐसे अपराधी को कोई विशेष लोग मारे वा अन्य? इसका समाधान मनु महाराज ने इस प्रकार किया है—'दुष्ट पुरुषों के मारने में हन्ता को पाप नहीं होता, चाहे प्रसिद्ध मारे चाहे अप्रसिद्ध।'

यह व्यवस्था आज भी प्रासंगिक है, यदि इसे सत्य, विवेक के आलोक में देखा जाए। यदि कोई गोली बरसाता हुआ आतंकवादी हजारों व्यक्तियों को मार दे और ऐसे आतंकवादी को कोई साधारण, अप्रसिद्ध व्यक्ति मार दे तो क्या वह हन्ता दण्ड का अधिकारी है? अब गाय के हन्ता व गोमांस भक्षी को महापापी व बड़े दण्ड का अधिकारी वही मानेगा जो गाय के महत्त्व को समझता है। ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो बात स्पष्ट हो जाती है कि गो-घाती व गोमांस भक्षी इस देश की आस्था पर भयंकर चोट करते हैं। आर्थिक महत्त्व के आधार पर महर्षि दयानन्द जी आंकड़े देकर स्पष्ट घोषणा करते हैं—'इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा।' दु:ख की बात यह है कि 'असहिष्णुता' का बवाल उठाने वालें का विरोध पाप मिटाने के ढंग का विश्लेषण न करके पाप को पुष्टि देने वाला सिद्ध हो रहा है।

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुँच रही है। हमारा हरसंभव प्रयास होता है कि इस पत्रिका में उच्च कोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित कर आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये आम जनता तक इसका लाभ प्राप्त हो। लेकिन यह तभी संभव है जब आप सबका हमें पूरा सहयोग मिले। इसलिए 'आर्य प्रतिनिधि' के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन 'आर्य प्रतिनिधि' के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछड़ा शुल्क नहीं भेजा है, उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। 'आर्य प्रतिनिधि' का वार्षिक शुल्क 150/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1500/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक 'आर्य प्रतिनिधि' के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा। पत्रिका शुल्क भेजते समय फोन नंबर अवश्य लिखें।

व्यवस्थापक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
दयानन्दमठ रोहतक, फोन 01262-216222

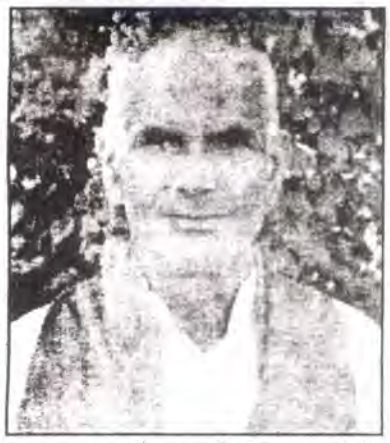

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा महात्मा वेदपालजी आर्य की सेवा में प्रस्तुत प्रशस्ति-पत्र

हमारा सौभाग्य है कि यथार्थ के धरातल पर खड़े, महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित कर्मठता, तप-त्याग की प्रतिमूर्ति देवतुल्य कार्यकर्त्ताओं के हृदय सम्राट, प्रसिद्ध वैदिक कार्यकर्त्ता आज हमारे बीच में विराजमान हैं। ऐसे कर्मशील समर्पित, महान् पुरुष का अभिनन्दन किया जाना 'यज्ञ' धातु के 'देवपूजा' अर्थ को मूर्तरूप देना है जो कि हम वेदानुयायियों का पुनीत धार्मिक कर्त्तव्य है।

जन्म-वैदिक आदर्शों को भूमण्डल पर प्रसारित करने हेतु आपका आविर्भाव 3 मार्च, 1952 को हरयाणा प्रान्त के अन्तर्गत सोनीपत जिले के आहुलाना ग्राम, तहसील गोहाना में महर्षि दयानन्द के दीवाने, वैदिक परम्परा के रक्षक, परोपकारी, उज्ज्वल चरित्र के धनी, धर्मी पिता चौ० शेरसिंह जी आर्य (सामान्य किसान) एवं ममता की प्रतीक, धर्मरायण कर्त्तव्यपरायण माता श्रीमती चन्द्रावती जी आर्या के उच्च कुल आदर्श परिवार में हुआ।

शिक्षा-बाल्यकाल से ही आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। हर कक्षा में आप प्रथम श्रेणी एवं प्रथम सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते रहे हैं। **'यः क्रियावान् स पण्डितः'** महाभारत की इस शिक्षा को आपने अपने जीवन में पूरी तरह चरितार्थ किया। आपने समाज में प्रचारित होने वाली सभी शिक्षाओं को पहले अपने जीवन मे उतारा और उसके बाद उसे समाज के बीच खुलकर प्रचार किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने करो और कराओ का ही सिद्धान्त प्रतिपादित किया। ऋषि के परमभक्त होने के कारण इस सिद्धान्त को आपने अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया है।

पारिवारिक समर्पण-पुरुषार्थी, ईमानदार, सच्चे, परोपकारी, आध्यात्मिक, वैदिकधर्मी, प्रातः स्मरणीय पूज्य माता-पिता को जीवन पर्यन्त किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न होने पाये और सदैव सुख-शान्ति को प्राप्त रहें, उनकी पवित्र सेवा जीवन पर्यन्त होती रहे आदि के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आपने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का शुभ संकल्प किया और भाइयों को उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कराने और उन्हें आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न करने एवं धार्मिक व सामाजिक कार्यों में अग्रणी करने हेतु भी आपने अपनी विश्वविद्यालय स्तर की उच्च से उच्च शिक्षा को भी बीच में ही तिलाञ्जलि दे दी थी। आप पाँच भाइयों में सबसे बड़े हैं।

राजकीय सेवा-सन् 1974 में हरियाणा राज्य विद्युत् विभाग में लिपिक के पद पर नियुक्ति प्राप्त की और 20 वर्ष तक अत्यन्त कर्मठता व ईमानदारी से सेवा करते हुए अपर लिपिक के पद से ऐच्छिक सेवानिवृत्त आपने ले ली।

गृहत्याग-पारिवारिक उत्तर-दायित्व पूरा कर आपने अपने घर का हमेशा के लिए दिनांक 31 दिसम्बर 1985 को परित्याग कर दिया और सम्पूर्ण धरा को ही अपना घर समझने लगे। उसी दिन से परिवार के सदस्यों के विषय में विचारना बन्द किया। केवल माता-पिता के बारे में सुख-दुःख की जानकारी प्राप्त करते रहे।

सामाजिक कार्य-'वसुधैव कुटुम्बकम्' की युक्ति को चरितार्थ करते हुए आपने आर्यसमाज व संस्थाओं का निर्माण किया जो आज भी मानवता की सेवा कर रही है। गुरुकुल कालवा (जीन्द, हरयाणा) का सफल संचालन आपने 15 वर्षों तक किया और वहां अनेक भवनों का निर्माण कर उसे सुन्दरता प्रदान की तथा अनेक ब्रह्मचारियों का सहयोग किया। गऊशालाओं के भवनों के निर्माण में व विकास में, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक के परिसर में पाकशाला निर्माण में भी आपका ही योगदान रहा। पर्यावरण शुद्धि हेतु वृक्षारोपण, यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, युवा चरित्र निर्माण शिविर आदि जनोपयोगी कार्य आप निरन्तर कर रहे हैं।

सहयोग-आर्ष विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु ब्रह्मचारियों को आप निरन्तर तन, मन, धन से सहयोग करते रहे हैं और आज आचार्य सनत कुमार जी वेदाचार्य वैदिक विद्वान् जैसे अनेक विद्वान् व कार्यकर्त्ता आपसे सहयोग पाकर विद्वान् बनकर समाज की सेवा में अपना जीवन समर्पित किये हुये हैं। गुरुकुल कालवा, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, गुरुकुल लाढौत, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि किसी न किसी रूप में आपके सहयोग के ऋणी रहेंगे।

संस्था-आपके द्वारा स्थापित अनेक संस्थाओं में सर्वोच्च संस्था 'सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास' (पंजी०) पानीपत है जिसके माध्यम से मानवता की महती सेवा हो रही है। पुस्तकों का प्रकाशन, छात्रवृत्तियों का देना, प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना व वेदप्रचार आदि कार्य इसके प्रमुख कारण हैं। आर्यसमाज थर्मल कालोनी, पानीपत हरयाणा की स्थापना कर संचालन किया। वर्तमान में संरक्षक रूप में सेवारत हैं। यही आर्यसमाज आपका निवास स्थान है।

विभिन्न पदों का सफल निर्वहन-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कोषाध्यक्ष के पद को अलंकृत करते हुए आपने शुचिता और त्याग का आदर्श प्रस्तुत किया। आर्य विद्या परिषद् हरयाणा, संचालित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा के प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) पद पर कार्य करते हुए आपने कर्मठता का आदर्श प्रस्तुत किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भी आप अन्तरंग सम्मानित सदस्य रहे हैं।

प्रेरणास्त्रोत-आपके जीवन में 'वैदिक मशीनरी भावना' की दृढ़ता के लिए पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वर, रोजड़ (गुजरात), आचार्य डॉ० सुमेधा जी एवं आचार्य डॉ० सुकामा जी कन्या गुरुकुल चोटीपुरा (उ०प्र०) आदि की विशेष प्रेरणा रही है। इसलिए आप भूमि से जुड़कर ही कार्यशील रहते हैं।

वैदिक धर्म व आर्य संस्कृति को समर्पित-आपका जीवन वैदिक धर्म व आर्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्णतः समर्पित है। **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को आप मूर्तरूप में देखना चाहते हैं। इसके लिए युवापीढ़ी को आप हर प्रकार का सहयोग देकर आगे लाते रहते हैं ताकि वे राष्ट्र की बागडोर को संभाल सकें और वैदिक धर्म की दुन्दुभि सर्वत्र बजा सकें। आपने समय-समय पर शिकागो, न्यूजर्सी (अमेरिका), हालैण्ड, फ्रांस, स्वीटजरलैंड, विनिस, इटली, लंदन आदि विदेशों की यात्राएं भी की हैं।

गुण-गण-विभूषित-सादगी, सरलता, सौम्यता, धार्मिकता, जिज्ञासु-प्रवृत्ति, विनम्रता, कर्त्तव्यपरायणता, अनुशासन, उदारता, कर्मठता, ऊर्जा, परोपकार, अर्थ की शुचिता, ईमानदारी, सत्यता, दूसरों को ऊँचा उठाना, ईश्वर के प्रति समर्पण, ऋषि दयानन्द के प्रति सर्वस्व त्याग आपकी सफलता के आधारस्तम्भ हैं, जिन पर आपके जीवन का भव्य भवन निर्मित है।

सम्प्रति-आज मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह में आपके वैदिक संस्कृति एवं गुरुकुलीय पावन परम्परा के प्रचार-प्रसार, युवकों में उच्च नैतिकता का निर्माण, समाजसेवा, गोरक्षा, यज्ञीय जीवन के प्रति लोगों में रुचि पैदा करने तथा अन्य सभी उदात्त आर्य मान्यताओं के संवर्धन, संरक्षण हेतु आपके दृढ़ संकल्प के प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए श्री कर्मजीत, ब्रह्मजीत, डॉ० सुखदा शास्त्री, अमरजीत शास्त्री ने आर्यजगत् की प्रसिद्ध विदुषी, तप-त्याग की मूर्ति अपनी बड़ी बहन आचार्या सुकामा आर्या के निर्देशन में उदार हृदय, उत्साही, गुरुकुलीय शिक्षा के पोषक, निडर, आर्यजगत् के सम्मानित कार्यकर्त्ता के रूप में विख्यात अपने पूज्य पिता श्री राजेन्द्रदेव सिंह (याकूबपुर झज्जर, हरयाणा) की स्मृति में स्थापित सम्मान से हम मानव सेवा प्रतिष्ठान की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

निवेदक

मानव सेवा प्रतिष्ठान

60-बी, हुमायूँपुर नई दिल्ली-110029

कार्यक्रम स्थल : दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशव पुरम् दिल्ली-110035

दिनांक 25 अक्तूबर, 2015

निर्वाचन

दिनांक 30.09.2015 को हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर (राज०) के चुनाव में निम्न पदाधिकारियों का चयन हुआ—

कार्यकारी प्रधान-श्री विजयसिंह भाटी, मंत्री-श्री आर्य किशनलाल गहलोत, उपमंत्री-श्री विमल शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री जयसिंह गहलोत पालड़ी।

—आर्य किशनलाल गहलोत मंत्री

जिला हिसार में वेदप्रचार का धुआंधार प्रचार किया गया

हिसार। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार के तत्त्वावधान में 7 अक्तूबर से 20 अक्तूबर 2015 तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार रथ के माध्यम से धुआंधार वेदप्रचार किया गया तथा सामाजिक बुराइयों व राष्ट्रीय समस्याओं पर विद्वान् वक्ताओं ने अपने विचार रखे तथा गोहत्या के बारे में दर्दनाक चलचित्र (फिल्म) दिखाकर लोगों को जागरूक किया। साथ में चरित्र निर्माण व आत्मा-परमात्मा के स्वरूप के बारे में भी ज्ञान दिया गया। देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला एवं शराबखोरी पर भी विचारों के द्वारा लोगों को अवगत करवाया गया।

इस कार्य में निम्नलिखित विद्वानों ने भाग लिया—आचार्य योगेन्द्र जी, महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, डॉ. प्रमोद योगार्थी, आचार्य मानसिंह पाठक, कैलाश शास्त्री, राजसिंह आर्य, मंडल अध्यक्ष रामकुमार आर्य, युद्धवीर सिंह आर्य, बहन कल्याणी, मा० चतरसिंह आर्य, महाशय फूलसिंह आर्य, खजानसिंह आर्य, सुभाष खुंडिया आदि ने उपर्युक्त विषयों पर प्रकाश डाला।

निम्नलिखित ग्रामों व विद्यालयों में वेदप्रचार किया गया—सैक्टर-15 हिसार, धांसु, न्यौलीकलां, लुदास, सैनियान मोहल्ला, पनिहार, गुरुकुल धीरणवास, डोभी, किरतान, गोरछी, टोकसपातन, सरसाना, मातृश्याम, न्यौली खुर्द, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, लाडवा, घिराय, कॉस्मॉस स्कूल, जे.बी.टी. शिक्षा महाविद्यालय, हिन्दू पब्लिक स्कूल, गुरुकुल आर्यनगर, राजकीय उच्च विद्यालय, हिन्दू पब्लिक स्कूल, गुरुकुल आर्यनगर, राजकीय उच्च विद्यालय, आर्यनगर उच्च विद्यालय, सैक्टर-14 हिसार आदि।

इस कार्यक्रम में गांव व स्कूलों में जिन व्यक्तियों का विशेष सहयोग रहा वे निम्न हैं—श्री युद्धवीर सिंह आर्य, प्रिंसिपल महेन्द्र सिंह पामल, प्रिंसिपल महेन्द्र सिंह श्योराण, प्रिं० धर्मपाल, प्रिं० सत्यवीर, सुरेश शास्त्री, अभिमन्यु, कपूर सिंह, स्वामी सर्वदानन्द, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, सुभाष चाहर, मा० चतरसिंह आर्य, फूलसिंह, आर्य, सू० हरिसिंह आर्य, प्रिं० अनिल कुमार, शमशेर नम्बरदार, धर्मवीर पूनिया, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, ईश्वरसिंह आर्य आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री
वेदप्रचार मण्डल हिसार

अपील

सभी आर्यसमाजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी नि:शुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रात:-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अत: समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

वेदप्रचार मण्डल की महत्त्वपूर्ण बैठक एवं साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम सम्पन्न

हिसार। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की महत्त्वपूर्ण बैठक दिनांक 25.10.2015 को प्रात: 9 बजे महात्मा आनन्द स्वामी सभागार में प्रधान श्री रामकुमार आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। वेदप्रचार कार्यक्रम की तथा आय-व्यय की समीक्षा की गई। भविष्य में पारिवारिक यज्ञ व वेदप्रचार की योजना बनाई गई। बैठक में वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, कर्नल ओमप्रकाश आर्य, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, श्री महेन्द्रसिंह आर्य, मा० दिलबागसिंह आर्य, सूबेदार हरिसिंह आर्य, कैलाश शास्त्री आदि उपस्थित थे।

प्रात: 10 बजे आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का साप्ताहिक सत्संग शुरू हुआ। श्री कैलाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया एवं छात्रों ने मन्त्रपाठ किया। प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने गायत्री मन्त्र की व्याख्या की तथा सन्ध्या-हवन को जीवन से जोड़ने का सुझाव दिया। श्री आर.एस.चुग ने एक भजन सुनाया। छात्र ने भी ईश्वर भक्ति का भजन गाया। श्री चिरंजीलाल आर्य ने भी विचार रखे। मंच का संचालक विनय मल्होत्रा ने भी महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री सत्यवीर प्रेरक ने भी विचार रखे। स्नेही जी ने सबका परिचय करवाया। श्री कैलाश शास्त्री ने समाज के सत्संग में परिवार सहित आने अनुरोध किया। इस सत्संग में श्री प्रमोद लाम्बा, विनय आर्य, श्रीमती सन्ध्या आर्या, पं० रविदत्त आर्य, मनुदेव शास्त्री आदि तथा 28 विद्यालय के छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम 12.30 बजे तक चला। शान्तिपाठ के बाद सबने प्रीतिभोज किया।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य,
मंत्री वेदप्रचार मण्डल हिसार

नवगृह प्रवेश पर यज्ञ का आयोजन

हिसार। गीता कालोनी, हिसार में 26.10.2015 को नवगृह प्रवेश पर यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री रणधीर सिंह दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। आचार्य जी का सारगर्भित आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। श्रीमती ब्रह्मा देवी ने ईश्वर भक्ति का गीत गाया। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने दो विधि और एक निधि पर प्रकाश डाला। शराब, धूम्रपान, ताश, जुआ आदि बुराइयों से दूर रहने का सुझाव दिया। श्री निहालसिंह पूर्व इंसपेक्टर ने भी विचार रखे। इस अवसर पर दीपक आर्य, शाहिल, नेहा, राजकला आर्या आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया। **—मा० दिलबागसिंह आर्य, उपमंत्री वेदप्रचार मण्डल, हिसार**

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक : 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2015 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

शिविर आयोजक : वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी.) रोहतक

शिविराध्यक्ष : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

अन्य विद्वान् : स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य कर्मवीर जी योग शिक्षक, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) व कमलेश राणा जी, महिला योग शिक्षिका, रोहतक।

प्रवेश शुल्क: 1000/- रुपये

आवेदन करने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर 2015

शिविर प्रवेश पात्रता

1. स्वस्थ व्यसनरहित अनुशासन में चलने वाले को प्रवेश दिया जाएगा।
2. आयुसीमा—न्यूनतम 15 वर्ष।
3. शिक्षा—न्यूनतम 10वीं कक्षा पास।

विशेष-उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। ब्रह्मचारियों के लिए प्रवेश नि:शुल्क होगा। अन्य छात्र एवं छात्राओं के लिए शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में प्रवेश के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

आवेदन/पंजीकरण करने हेतु सम्पर्क सूत्र—

श्री हवासिंह राठी - मोबा० 09466008120
श्री कर्णसिंह मोर - मोबा० 09728884949
श्री सुगमा मुनी (पूर्व नाम श्रीमती अंगूरी देवी आर्या) - मोबा० 09812792770
निवेदक : निगम मुनि, मोबा० 9355674547

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्यो! सम्भल जाओ अन्यथा पछताओगे

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

हमारा प्यारा आर्यावर्त (भारत) किसी समय समस्त संसार का स्वामी था, सकल विश्व में भारत की महिमा के गीत गाये जाते थे। संसार भारत को देवभूमि मानकर इसके आगे शीश झुकाता था। वस्तुत: सारे जगत् में आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था तथा सारी दुनिया के नर-नारी प्रात: उठकर परमात्मा से प्रार्थना करते थे कि हे सकल विश्व के रचने वाले जगदीश्वर! हमें दूसरा जन्म ऋषियों की भूमि आर्यावर्त में देने की कृपा करना जिससे हम सब वेदवेत्ता त्यागी-तपस्वी ईश्वरभक्त धर्मात्मा परोपकारी ऋषियों के चरणों में बैठकर वैदिक ज्ञान प्राप्त करके अपने इस मानव तन को सफल करके मोक्ष की प्राप्ति कर सकें। उस समय आर्यों की समस्त संसार में धाक थी। विद्वान् कहते हैं कि उस समय भारतवासी देवता माने जाते थे।

इस देश में सत्यवादी हरिश्चन्द्र, अश्वपति, राम, भोजै, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य जैसे ईश्वरभक्त धर्मात्मा प्रजापालक सम्राट थे जो जनता को पुत्र की तरह हृदय से प्यार करते थे। यह क्रम महाभारत काल तक चलता रहा किन्तु महाभारत के युद्ध के पश्चात् यहाँ वैदिक विद्वानों की कमी हो गई थी। रही सही हमारी प्रतिष्ठा आपस की फूट ने खत्म कर दी जिससे यह देश लगभग एक हजार वर्ष तक विधर्मी मुसलमानों और ईसाइयों के पराधीन रहा जिन्होंने यहाँ रात-दिन भारी अत्याचार किये। विधर्मी लोगों ने हमारे धर्मग्रन्थ जला दिये तथा लाखों देशभक्तों की हत्या कराई एवं दुष्टों ने हमारी बहन-बेटियों का धर्म नष्ट किया।

जगतपिता जगदीश्वर की कृपा से इस देवभूमि में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने टंकारा (गुजरात) में कर्षण जी तिवारी (अम्बाशंकर) के घर माता यशोदाबाई की कोख से जन्म लिया जिनका बालकपन का नाम मूलशंकर था। स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लिया तथा गुरु विरजानन्द सरस्वती से मथुरा नगरी (उत्तर-प्रदेश) में वेदज्ञान प्राप्त किया। स्वामी जी ने गुरुदेव की आज्ञा मानकर भारतभर में वैदिक प्रचार किया। इस कार्य को करने में उनके सामने भारी विघ्न-बाधाएँ आईं, लेकिन वे कभी भी नहीं घबराए। उन पर ईंटें, पत्थर बरसाए गए, गोबर-कीचड़ फैंका गया और घातक हमले किये गये। वे हर प्रकार से विधर्मियों का डटकर मुकाबला करते रहे।

स्वामी जी ने सबसे पहले पोंगापंथी पौराणिकों पर हमला किया तथा स्पष्ट किया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। वेदों के विरुद्ध जितने भी ग्रन्थ हैं, सब कपोल-कल्पित हैं तथा मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है। उन्होंने काशी, मथुरा, हरिद्वार, जगन्नाथ, अमरकोट आदि स्थानों पर जाकर वेदप्रचार करके पाखण्डी लोगों को परास्त किया। इसके बाद मुल्ला-मौलवियों को तथा पोप-पादरियों को शास्त्रार्थ में हराया। स्वामी जी नेअपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में तेरहवाँ व चौदहवाँ समुल्लास ईसाइयों व मुसलमानों को झूठा व पाखण्डी प्रमाणित करते हुए लिखे। बौद्ध और जैनमत का खण्डन किया। उस समय उनसे कोई भी विधर्मी विजय प्राप्त न कर सका। वस्तुत: वे अजेय योद्धा माने गए। संसार उन्हें श्रद्धा से याद करता है।

स्वामी जी ने घोषणा की कि संसार में कर्म ही प्रधान है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है। उन्होंने वेदों के प्रमाण देते हुए ईश्वर को निराकार सर्वव्यापक अजन्मा अनादि अनुपम सर्वज्ञ अजर अमर न्यायकारी दयालु बताया तथा दृढ़तापूर्वक कहा कि ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है इसलिए उसे जन्म धारण करने की जरूरत नहीं है।

स्वामी जी ने जन्म-जाति को गलत बताया तथा घोषणा की कि जो व्यक्ति ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर वेदविरुद्ध कार्य करता है वह शूद्र से भी नीची कोटि में चला जाता है तथा संसार में दुष्ट की पदवी पाता है तथा जो व्यक्ति शूद्र के घर जन्म लेकर भी अच्छे कर्म करके विद्वान् ईश्वरभक्त बन जाता है वह ब्राह्मण की पदवी पाता है।

स्वामी जी ने गऊ को माता बताया तथा गोरकरुणानिधि लिखकर गऊ का महत्त्व बताया। स्वामी जी ने विदेशी राज्य को दु:खदायी व स्वदेशी राज्य को सुखदायी बताया। उन जैसा त्यागी तपस्वी ईश्वरभक्त धर्मात्मा सदाचारी तपधारी साधु संसार में अब तक कोई नहीं आया। आर्यो! आपस की लड़ाई बन्द करो और महर्षि दयानन्द महाराज की शिक्षाओं को मानो और वेदप्रचार करके संसार का कायाकल्प कर दो अन्यथा पछताते रह जाओगे। अन्त में मेरी सबसे प्रार्थना है—

आर्यकुमारो! विश्व में,
करो वेद प्रचार।
देवपुरुष बनकर करो,
जगती का उद्धार॥
याद रखो संसार में,
जो करते शुभ कर्म।
वही पालते हैं सुनो,
पावन वैदिक धर्म॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

विजय दिवस पर्व पर यज्ञ का आयोजन

हिसार। दशहरा (विजय) पर्व पर नवनिर्मित चौपाल में गांव को आबाद हुए 527 वर्ष हो गए हैं, 22.10.2015 को यज्ञ किया गया। पंडित भरतलाल शास्त्री ने यज्ञ किया तथा उन्होंने दशहरा पर्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर गांव के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कई सरपंचों को भी स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया। श्री रामभगत आर्य व जयवीर शर्मा ढ़ढ़ेरी को गांव की ओर से दोनों महानुभावों को पगड़ी देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, जयराम आर्य, सतपाल मलिक, बृजभान मलिक एस.डी.ओ., रामकुमार आर्य, हरनारायण आदि उपस्थित थे। —दिलबाग सिंह आर्य, गांव उमरा, जिला हिसार

यज्ञ का आयोजन

हिसार। आर्य निवास नलवा (हिसार) में राजवीर आर्य के मकान पर 22.10.15 को विजय दिवस पर सायंकाल यज्ञ किया गया। यज्ञ वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा किया गया। स्नेही जी ने दशहरा पर्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह पर्व क्षत्रियों का पर्व है। इसे अधर्म पर धर्म की विजय बताया। इस अवसर पर राजवीर आर्य, बृजभान मलिक एस.डी.ओ., भलेराम आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, सरोज आर्या, युद्धवीर आर्य, बेटी उर्मिल आर्या आदि उपस्थित थे।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज ग्राम कौंडल, जनपद पलवल (हरयाणा) का वार्षिकोत्सव दिनांक 2.10.2015 को पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य बहीन जनपद पलवल (हरयाणा) की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देवयज्ञ का आयोजन किया गया तथा यज्ञोपरान्त स्वामी वेदानन्द सरस्वती को उनकी पुण्यतिथि पर उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। इस वार्षिकोत्सव में गोरक्षा, स्त्रीशिक्षा, चरित्र-निर्माण, देश को महर्षि दयानन्द की देन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन किए गए। इस समारोह में श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री पलवल, श्री नारायण आर्य बंचारी, श्री वीरसिंह आर्य पलवल, श्री रूपचन्द आर्य औरंगाबाद तथा श्री ओमप्रकाश आर्य भजनोपदेशक कौंडल ने भी सम्बोधित किया। श्री हरवंश शास्त्री, श्री रणवीरआर्य, मा० जहारिया, श्री उदयचन्द आर्य का विशेष सहयोग रहा। शान्तिपाठ व ऋषिलंगर के उपरान्त समारोह का समापन किया गया।

—बिजेन्द्र सिंह आर्य मंत्री, आर्यसमाज कौंडल जनपद पलवल

वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर का 112वां वार्षिकोत्सव एवं 25वां कार्तिकमासीय यज्ञ आर्य नेता कै. रघुनाथ सिंह जी के संरक्षण एवं प्रान्तीय सभा, राजस्थान के पूर्व महामन्त्री श्री अमरमुनि जी की अध्यक्षता में आगामी दिनांक 24 व 25 नवम्बर 2015 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता मुख्य अतिथि एवं श्री सतपाल आर्य व पं० विनोदीलाल दीक्षित समारोह के विशिष्ट अतिथि होंगे। -कमला शर्मा, उपप्रधान, आर्यसमाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

घंडरां में ध्यान एवं स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

उच्च कोटि के विद्वान् एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के मन्त्री श्री रामफल आर्य अग्निहोत्री के सानिध्य में दयानन्दमठ घंडरां में ध्यान एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया यह मठ हिमाचल प्रदेश में काँगड़ा जिले की इन्दौरा तहसील के अन्तर्गत घंडरां गाँव के सुदूर जंगल में स्व० स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा स्थापित है। यहाँ अत्यन्त शान्त वातावरण और दूर-दूर तक जंगल ही जंगल है पक्षियों के कलरव के अलावा यहाँ कोई शोर सुनने को नहीं मिलता अर्थात् ध्यान की दृष्टि से एकदम उपयुक्त स्थान कहा जा सकता है।

13 से 18 अक्तूबर 2015 तक चले इस शिविर में जाने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ श्री रामफल आर्य जी ने पूरे शिविरकाल में शिविरार्थियों को कड़े नियमों बाँधकर प्रशिक्षण दिया। शिविर में मुख्यत: हिंमाचल प्रदेश, पंजाब, हरयाणा, बिहार तथा मध्यप्रदेश के शिविरार्थी थे, जो कड़े नियमों में बँधकर भी प्रशिक्षण से अति प्रसन्न थे श्री अग्निहोत्री सपत्नीक यहाँ पहुँचे थे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रानी आर्या जी शिविर की व्यवस्था (भोजनादि) में पूरा हाथ बँटाती थी तथा सांयकालीन कक्षा में भक्ति गीतों के साथ भी समाँ बाँध देती थी। इससे भी इतर इन दोनों की निरभिमानता ये थी कि प्रात:काल 4 बजे जब हम शिविरार्थी उठते थे तो ये विद्वान् पति-पत्नि खुले आँगन में झाड़ू लगाते हुए मिलते थे जिस कारण हम सभी प्रेरित होकर सब कामों में सहयोग करते थे श्री रामफल जी ने शिविर के दौरान हमें बताया कि ध्यान लगाने के लिये सर्वप्रथम सार्वजनिक जीवन में यम-नियमों की पालना अत्यन्त आवश्यक है जब तक इनकी पालना नहीं होगी तब तक चाहे आपका कितना ही लंबा बैठने का अभ्यास क्यों न हो, ध्यान नहीं लग सकता उन्होंने प्रतिदिन प्रात: शाम ध्यान का अभ्यास कराया और साथ ही स्वाध्याय का महत्व बतलाते हुए समझाया कि अध्याय नाम वेद का है इसलिये आर्ष ग्रन्थों के पठन को ही स्वाध्याय कहा जाएगा अन्य का नहीं इस श्रेणी में हर कक्षा में वेद के मंत्रों को अर्थ सहित समझाया गया वैसे तो शिविर के निमित्त कोई शुल्क नहीं रखा गया था तथापि सभी शिविरार्थियों ने रामफल आर्य जी के निवेदन पर खूब दान दिया और जैसा कि हम जानते हैं कि विद्वान् को दक्षिणा दी जानी चाहिये और विद्वान् को लेनी भी चाहिये किंतु मठ के संचालक स्वामी संतोषानंद जी ने जब श्री रामफल आर्य जी को दक्षिणा देनी चाही तो न केवल उन्होंने लेने से मना कर दिया उल्टे एक अच्छी खासी राशि मठ को दान में दी शिविर के दौरान ही पूज्य स्वामी सदानन्द जी संचालक दयानंद मठ दीनानगर का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ अन्तिम दिन 18 अक्तूबर को स्वामी सदानन्द जी ने श्री रामफ्ल आर्य अग्निहोत्री को और हम सब शिविरार्थियों को दयानन्द मठ दीनानगर के लिये आमंत्रित किया जिसके लिये कुछ व्यक्ति चलने को तैयार हो गए। श्री बलविंद्र जी शास्त्री सचिव दयानन्द मठ दीनानगर ने विद्वान् श्री अग्निहोत्री जी का पूरा लाभ लेने के उद्देश्य से मठ द्वारा संचालित कई शिक्षण संस्थाओं में उनके प्रवचन का कार्यक्रम रखवा दिया।

घरौंटा व झांगी के स्कूलों में रामफल आर्य जी द्वारा यज्ञ कराया और दोनों विद्यालयों में विशेष सभा बुलाकर आर्य जी का बच्चों को उद्बोधन कराया गया जिसमें उन्होंने बच्चों को जीवनोपयोगी व राष्ट्रनिर्माण के भावों से भर दिया इसके बाद दीनानगर में मठ द्वारा संचालित इंजीनियरिंग कॉलेज में कार्यक्रम रखवाया गया था यहाँ पर सैंकड़ों की संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। श्रीमती रानी आर्या जी ने इस अवसर पर भ्रूणहत्या पर जबरदस्त प्रहार करते हुए एक गीत सुनाया जिसने सबको भावुक कर दिया रामफल जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए उन्हें जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिये तैयार रहने को कहा उन्होंने भ्रष्टाचार का सीधा और आसान उपाय सुझाया कि आज का युवा जो भ्रष्टाचार से सर्वाधिक पीड़ित है। भ्रष्टाचार न करने की प्रतिज्ञा कर ले तो आगामी 5-10 वर्षों में पूरा आर्यावर्त्त भ्रष्टाचार मुक्त हो सकता है चूंकि इतने समय में ही आज का युवा हर छोटे बड़े पद पर बैठा होगा जहाँ से भ्रष्टाचार चलता है और समाप्त भी यहीं से हो सकता है अन्त में स्वामी सदानन्द जी ने मुख्य वक्ता के साथ-साथ उनके साथ आए देवराज (पठानकोट), ओमप्रकाश, माता शशि कपिला, वैदिक संसार पत्रिका के सम्पादक सुखदेव शर्मा (इंदौर), भगतराम व शरणदास (सुंदरनगर) तथा रमेश आर्य (जीन्द) का धन्यवाद किया। श्री बलविन्द्र शास्त्री जी ने सभी मेहमानों की रहन-सहन व खान-पान बहुत सुंदर व्यवस्था की सभी ने उनको धन्यवाद कर विदा ली।

—रमेश आर्य, पूर्व मन्त्री
वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पानीपत। गीता पब्लिक स्कूल राजनगर पानीपत में चल रहे चार दिवसीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर दिनांक 28.10.15 को सम्पन्न हुआ। यह शिविर आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के तत्त्वावधान में चलाया जा रहा है। इस शिविर में स्कूल के 150 विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया जिसमें सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, चन्द्र नमस्कार, जूडो-कराटे, आसन, प्राणायाम का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्य वीर दल पानीपत के मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री महावीर आर्य द्वारा दिया गया। अन्तिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य ने बच्चों को ब्रह्मचर्य तथा चरित्र-निर्माण के बारे में बताया। आचार्य राजकुमार शास्त्री ने बच्चों को आचार्य चाणक्य का उदाहरण दिया। स्कूल के डी.पी.ई. जगदीश चहल ने अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर गीता पब्लिक स्कूल के संचालक श्री सुभाष आर्य जी ने बच्चों को आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर पीटीआई संदीप आर्य, विद्यालय के सभी अध्यापकगण और विद्यार्थी उपस्थित थे।

—महावीर आर्य, व्यायाम शिक्षक
(आर्य वीर दल)

युवा शिविर सम्पन्न

4 अक्तूबर 2015 को आर्यसमाज मोखरा में युवा संस्कार शिविर लगाया गया। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में प्रथम ब्रह्मचर्य महिमा पर ओजस्वी व्याख्यान हुआ। आचार्य जी ने संयम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संसार के सभी वैज्ञानिक, ऋषि संयम के बल पर महामेधावी बने। ब्र० पंकज ने विचित्र आसन करके वाहवाही लूटी।

शिविर समापन पर यज्ञोपवीत संस्कार में सभी युवाओं ने जनेऊ धारण किये। आर्य राजेन्द्र जी, श्री बलवान जी, डॉक्टर जी व युवाओं को प्रतिदिन पढ़ाने वाले ब्र० विद्यानन्द B.Tech. को शिक्षक मण्डली ने सुन्दर व्यवस्था की। आचार्य जी ने कार्यक्रम के उपरान्त गोशाला मोखरा में भी यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

इसी प्रकार बालकों के जागरण का कार्यक्रम 2 अक्तूबर को मदीना में भी सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने यहां भी युवाओं को ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया।

शोक-समाचार

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री कर्णसिंह काद्यान (पूर्व मंत्री आर्यसमाज सिवाह जिला पानीपत) का लम्बी बीमारी के बाद लगभग 80 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक में आर्यसमाज सिवाह के प्रतिनिधि रहे। आपका आर्यसमाज के कार्यक्रमों में प्रशंसनीय योगदान रहा। श्रद्धांजलि सभा 29.10.2015 गुरुवार को इनके पैतृक गांव सिवाह में वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। सभा की आपको विनम्र श्रद्धांजलि तथा सन्तप्त परिवार के प्रति गहरी सन्वेदना।

—लाभसिंह काद्यान, पूर्व प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।